अध्याय - 7

पं. नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्य : समापन

अध्याय - 7

नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्य : समापन.

प्रबंध काव्य के दो मुख्य भेदों महाकाव्य एवं खंडकाव्य का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य की यह एक महत्वपूर्ण विधा हैं। इसका उद्‌भव संस्कृत साहित्य से हुआ है। संस्कृत काव्यशास्त्र में खंडकाव्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग आचार्य विश्वनाथ कृत साहित्य-दर्पण में हुआ है। पहले अध्याय 'खंडकाव्य सैध्दांतिक विवेचन' में खंडकाव्य की परिभाषाओं के आधार से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस विधा में महाकाव्य जैसा जीवन का विस्तृत विश्लेषण नहीं होता, तो इसमें जीवन के एकही पक्ष का चित्रण होता हैं। कथानक में एकात्मक अन्विति और कसाव अधिक होता हैं। इस दृष्टिसे खंडकाव्य की कथा में एकदेशीयता होती है। इसमें महाकाव्य के समान तारतम्य होते हुए भी अनेक सर्गो , विविध छंदो विभिन्न रसों, एवं प्रकृति चित्रण आदि का समावेश आवश्यक नही होता। खंडकाव्य के तत्वों के विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि खंडकाव्य कथावस्तु में कथा सगठन आवश्यक होता हैं। कथा के विकास में क्रम, आरंभ, विकास, चरमसीमा और निश्चित उद्‌देश्य होता है। कथा का विकास अपने लघु आकार में भी इतना सुव्यवस्थित और कसा हुआ होता है जिससे सर्गबध्दता और संधियों का विधान आवश्यक नही होता। कथावस्तु की लघुता के कारण ही खंडकाव्य में प्रासंगिक कथाओं के लिए स्थान नहीं दिया जाता।

खंडकाव्य की कथा सश्लिष्ट होती हैं, कथा संक्षिप्त होनेपर भी उसमें निश्चित उद्‌देश्य होता है। खंडकाव्य किसी अन्य काव्यरुप का खंड न होकर अपने आप में पूर्ण स्वतंत्र काव्य विधा है। खंडकाव्य में कवि की अनुभूति भी खंडरुप में न होकर पूर्ण रुप में होती है, इसके लिए कवि को पौराणिक अथवा ऐतिहासिक व्यक्ति के जीवन की कोई घटना प्रभावित नही करती अपितु समाज में प्रतिदिन होनेवाली कोई घटना काव्य सृजन के लिए प्रेरित करती है। खंडकाव्य में कवि ऐतिहासिक या पौराणिक पात्रोंको प्रतीक रुप में चुनता है और कल्पना से कथावस्तु का निर्माण कर उसे खंडकाव्य का स्वरुप प्रदान करता है। खंडकाव्य के

CENTR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

माध्यम से कवि किसी सामाजिक समस्या अथवा अपना जीवन दर्शन प्रस्तुत करने के लिए प्रतीकात्मक आख्यान को चुनता है।

दूसरे अध्याय में "नरेंद्र शर्मा का जीवन तथा काव्य यात्रा" की चर्चा है। इसमें नरेंद्र शर्मा के व्यक्तिगत परिचय के साथ ही उनके जीवन की विविध तथा प्रमुख घटनाओ के कारण उनके काव्यसृजन को किसप्रकार प्रेरणा मिली इस बात को उनकी विभिन्न कृतियों के आधारपर संक्षिप्त रुप से स्पष्ट किया गया हैं। श्री नरेंद्र शर्मा का जन्म 28 फरवरी 1913 को उत्तरप्रदेश के जिल्हा बुलंदशहर की तहसील खुर्जा के जहाँगीरपुर नामक गाँव में एक मध्यमवर्गीय ब्राम्हण परिवार में हुआ। चार वर्ष की आयु में ही पिता का छत्र समाप्त होने पर भी छोटे और बडे ताऊजीने लाड प्यार और स्नेहपूर्ण वातावरण में नरेद्रजी का पालनपोषण किया। बचपन में अनेक कठिनाईयो का सामना करते हुए भी छात्रजीवन से लेकर अपनी मृत्युतक उन्होंने अपनी काव्यप्रतिभा आलोक से हिंदी काव्य को महत्वपूर्ण दिशा प्रदान की हैं। उन्होंने आधुनिक हिंदी काव्यधारा के लब्ध प्रतिष्ठित कवि के रुप में अपनी ख्याति प्राप्त की।

सन 1932 में उनकी सबसे पहली रचना आँसू चाँद नामक मासिक में छपी, इसके बाद दूसरी रचना सरस्वती में प्रकाशित हुई। इसके अलावा उनका प्रथम कविता संग्रह शूल फूल सन् 1934 में प्रकाशित हुआ। दूसरा कविता संग्रह सन 1936 में कर्णफूल नाम से प्रकाशित हुआ। इन दोनों कृतियों में कवि ने अपने अल्हड एवं युवा मन को सहज रुप में अभिव्यक्त किया है। इस में संकलित कविताओ में प्रेम निवेदन, संयोग, मधुरिमा, एवं विरह व्यथा को प्रकट किया है। 'प्रभातफेरी' और 'बहुत रात गए' इन दोनों कविता सग्रह में कविने समाजसुधर असंतोष एव विद्रोह आध्यात्मिकता, प्रकृति, पौराणिकता सामाजिक चेतना प्रेम तथा लोकमंगल की भावना को प्रधानता दी है, तो आगे चलकर कवि के काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ बन गई। सन 1939 में प्रकाशित उनका काव्यसंग्रह प्रवासी के गीत की कविताओं में लौकिक एवं मांसल प्रेम के साथ-साथ सात्विक एवं आदर्श प्रेम की अभिव्यक्ति की है। इस में प्रधानता तो निराशा, अवसाद, करुणा और विवशता की ही रही है। कविका पाँचवा कविता संग्रह पलाशवन 1940 में प्रकाशित हुआ जिसमें कवि ने प्राकृतिक पीठिका से लोकतत्व, विरह सवेदना, और स्वस्थ प्रेम का चित्रण किया।

'कामिनी' एक प्रणय गाथा हैं और इसमें अतिथि, फूल और पत्र, निशिवासर तथा वासरमास नामक चार अध्यायों में कामिनी ओर अतिथि के मिलन, विरह एवं पुनर्मिलन की कथा का चित्रण किया है। यह एक उद्देश्य प्रधान कृति हैं। नरेंद्रजी की सातवी काव्यकृति "मिट्टी और फूल" नाम से प्रकाश में आ गयी। इसमें कविने अंतःसंघर्ष को प्रधानता दी है। 'हंसमाला' एक चिंतनप्रधान कृति है।

LIBRARY
KOLHAPUR

इसमें कविने अपनी विचारधारा को स्पष्ट किया हैं। अपने व्यापक दृष्टिकोण से 'हंसमाला' में वे एक समन्वयवादी दार्शनिक और चिंतनशील कवि के रुपमें दिखाई देते देते हैं। 'रक्तचंदन' काव्य कृति महात्मा गांधी के निधन से प्रेरित होकर रची गई रचना हैं। इसमें कविने महात्मा गांधी का ही गुणगान किया हैं। सन 1950 में प्रकाशित 'अग्निशस्य' संग्रह कविताओं का प्रमुख विषय आध्यात्मिकता, पौराणिकता, नारी, राष्ट्रीयता, एवं लोकमंगल की भावना रही हैं। 'कदलीवन संग्रह की कविताओं में कविने जगत् की नश्वरता तथा मनुष्य के क्षणभंगुर जीवनपर विचार किया हैं। इसमें कवि के प्रगतिशील विचारों का प्राबल्य स्पष्ट हैं।

'द्रौपदी' खंडकाव्य में कवि ने महाभारत की कथा का आधार लेकर उसकी प्रमुख घटनाओं और पात्रों की प्रतिकात्मक व्याख्या के द्वारा मानवजीवन के शाश्वत मूल्यों को उठाने का प्रयास किया हैं। प्यासा निर्झर कृति में कविने ईश्वर, जीव, जगत्, एवं माया के संबंध में अनुभूतिपरक और बुध्दिमूलक विवेचन किया हैं। सन् 1965 में कविका लघुकाय प्रबंधकाव्य उत्तरजय प्रकाशित हुआ इसमें महाभारत की कथावस्तु का आधार लेकर पीडा का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, कर्मयोग साधना, और कालचक्र के आरोहण- अवरोहण के विधान का उल्लेख किया हैं। सुवर्णा काव्य की जननी कवि कल्पना है। इसमें महारथि कर्ण और सुवर्णा की दु:खद प्रेमकथा का वर्णन कल्पना से किया हैं। 'सुधीरा' एक कथाकाव्य हैं इसमें देशकाल के अंतर्गत और देशकालोत्तर आयामों तथा स्तरोंपर सक्रिय मातृशक्ति की गाथा हैं। 'कविश्री' और 'आधुनिककवि' नरेंद्रजी की प्रकाशित काव्य कृतियों से ही संकलित की गयी कविताओं का संग्रह हैं। इसकी कथावस्तु मूलत: महाभारत की लोकविख्यात कथापर आधारित हैं।

इस प्रकार दूसरे अध्याय में नरेंद्र शर्मा का परिचय तथा उनके काव्ययात्रा की जानकारी लेने के बाद द्रौपदी और उत्तरजय इन दो कृतियों के वस्तुविधान को अगले अध्यायों में प्रस्तुत किया हैं।

तीसरे अध्याय "नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्य: वस्तुविधान" में इन दोनों खंडकाव्यों के कथावस्तु की चर्चा की हैं। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती हैं कि कवि इन दो खंडकाव्यों के माध्यम से अपना आध्यात्मिक दृष्टिकोण और आस्थाओं को प्रकट करने में सफल रहा हैं।

द्रौपदी का कथानक चरित्रप्रधान हैं। इसमें द्रौपदी को प्रमुख केंद्र बनाकर अपना व्यापक आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रतीक पध्दति में अभिव्यक्त किया हैं। द्रौपदी की कथा मनुष्य के हृदय में स्थित विभिन्न भावोंकी प्रतीकात्मक कथा हैं। द्रौपदी जीवनीशक्ति की प्रतीक है, जो पाँच

तत्वरुपी पांडवों का संतुलन बनाए हुए है। इसमें युधिष्ठिर- आकाशतत्व, भीम - प्राणतत्व, अर्जुन - अग्नितत्व, नकुल- जलतत्व और सहदेव को भूमितत्व के रुप में यह जीवनीशक्ति प्रदान करती हैं। पाँच पतियों की स्वामिनी द्रौपदी के चरित्र को इस नूतन उद्‌भावना से एक अपूर्व गौरव मिल गया हैं। कवि ने द्रौपदी में भारतीय नारी के तेजबल का गुणगान किया हैं। नारी का त्याग ही सर्वश्रेष्ठ है। द्रौपदी के त्यागबिना धर्मराज की विजय असंभव थी नारी ही अपनी विजय का मूल्य अपनी दहन और सहनशक्ति से चुकाती है। इसतरह काव्य में द्रौपदी को एक सामान्य नारी नहीं बल्कि उदात्त रुप में चित्रित करते हुए कविने अपने नूतन आध्यात्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया हैं।

उत्तरजय की कथावस्तु महाभारत पर आधारित होते हुए भी उसमें पर्याप्त मौलिकता हैं। इसमें कवि नवीन प्रसंगों की उद्‌भावना करने में पूर्ण सफल रहा है। द्रौपदी के सदृश्य उत्तरजय में भी प्रतीकात्मकता के दर्शन होते हैं। कवि ने इस काव्य के माध्यम से अन्याय और अनाचार के विरुध्द शस्त्र उठाना चाहिए या नहीं इस समस्या को उठाया हैं। उत्तरजय की रचना सन् 1965 में की हैं उसीसमय चीन का पाशविक आक्रमण हमारे देशपर हुआ था, इस अप्रत्याशित घटनाओं को लक्ष्यकर प्रस्तुत कृतिकी रचना की गयी हैं। कविने इस काव्य द्वारा यह प्रकट किया है कि राजनीति के क्षेत्र में कोरी भावुकता और आदर्श से कार्य नहीं चलता, शत्रु प्रेम की भाषा नहीं समझता उसके लिए शस्त्र का प्रयोग करना आवश्यक हैं। कविने अपने विचारोंको प्रकट करने के लिए महाभारत के पात्रोंको प्रतीक रुपमें चित्रित किया हैं। कवि ने अश्वत्थामा के द्वारा पीडा का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है, तथा कालचक्र के आरोहण- अवरोहण का भी उल्लेख किया है।

इस अध्याय के अंत में प्रस्तुत दोनो कृतियों की कथा की प्रतीकात्मकता को स्पष्ट किया गया हैं। उपर्युक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती हैं कि खंडकाव्य की दृष्टिसे प्रस्तुत दोनों कृतियो के वस्तुविन्यास में कवि को पर्याप्त सफलता मिली हैं। द्रौपदी और उत्तरजय की कथावस्तु को कविने जिस ढंग से प्रस्तुत किया हैं वह रुप खंडकाव्य की कथा के बारे में एक आदर्श प्रस्तुत करता है।

चौथे अध्याय में नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्यों की 'पात्रपरिकल्पना' की दृष्टिसे चर्चा की गयी हैं। द्रौपदी में कवि ने जिसतरह पात्रो की योजना की हैं वह खंडकाव्य की दृष्टिसे बहुत अनुरुप लगती है। कविने अपने आध्यात्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने के लिए गूढ और प्रतीकात्मक पात्रयोजना की है। द्रौपदी पौराणिक चरित्र होने पर भी वह जीवनीशक्ति की शाश्वत प्रतीक हैं। जो पुरुषो में शक्ति प्रेरित कर्म का तेज भरकर अंधकारमय जीवन को गतिशील और

नर के लिए नारी एक ऐसी अद्‌भुत शक्ति हैं जो उसके कल्याण के लिए दुख, पीडा, यातना सहती है। वह अपने महान त्याग और बलिदान से पुरुष को कर्मयोगी बनाकर उसे श्री, समृध्दि, आनंदी जीवन की ओर प्रेरित कर अपनी महिमा को सिध्द करती हैं। आज के परिवेश में घुटन और विघटन से पीडित से पीडित इस भारत को संदेश देने की ऐसी जीवनीशक्ति सिर्फ द्रौपदी (नारी) में हैं।

पॉच पांडव पॉच महातत्वों युधिष्ठिर- आकाशतत्व, भीम-पवनतत्व, अर्जुन-अग्नितत्व, नकुल-जलतत्व, सहदेव- भूमितत्व के प्रतीक हैं। धृतराष्ट्र के पुत्र अपनी दुनीर्ति, दु:शासन क्रूरता और मदांधता के प्रतीक हैं। कुंती पुत्र कर्ण अवैध भाव का प्रतीक है, जो अनीति का दास बनकर जीवनीशक्ति और पुरुष के मिलन में बाधा बनता हैं। शकुनि मानस में स्थित तमस तत्व है। विदुर हृदयस्थ विवेक तथा गांधारी सद्‌गति और भीष्म पितामह पॉच तत्वों में निर्मित पार्थ तथा शत इच्छाओंवाले अंधमानस में स्थित भाव है। पृथा माता स्वयं पृथ्वी माता है। इसतरह कविने लौकिक पात्रोके माध्यम से जीवन का मर्मदर्शन प्रकट नहीं किया अपितु उन्हें प्रतीक रुप में प्रस्तुत कर सृष्टि यज्ञ की कथा मनोहारिणी शैली में चित्रित की हैं। अत: पात्रयोजना की दृष्टि से प्रस्तुत कृति को सफल माना जा सकता है।

'उत्तरजय' की पात्रयोजना में भी कवि ने अपने कौशल का परिचय दिया है। कविने महाभारत के पात्रोंद्वारा सामायिक युग की समस्या की अभिव्यक्ति की हैं, तथा पीडा का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। इसके लिए कविने महाभारत पात्रोको प्रतीक रुपमें चित्रित किया है। इस कृति में युधिष्ठिर, श्रीकृष्ण, अश्वत्थामा, दुर्योधन, धृतराष्ट्र के चरित्र महत्वपूर्ण होने पर भी युधिष्ठिर का चरित्र विशेष महत्वपूर्ण हैं। युधिष्ठिर-आकाशतत्व के प्रतीक हैं उसमे भारतीय संस्कृति का आदर्श रुप विद्यमान हैं। महाभारत के युध्द से उनके मनमें पश्चात्ताप की आग सुलगती है, अंत: संघर्ष निर्माण होता है। युधिष्ठिर के माध्यम से कविने अपना जीवन दर्शन अभिव्यक्त किया है।

श्रीकृष्ण को कवि ने नारायण रुप दिया हैं वह नारायण रुप में भी नर तथा कर्मयोग के संदेश देने वाले है। अश्वत्थामा पीडा का प्रतीक हैं, पीडा की चरमानुभूति के बिना प्राणी मुक्ति प्राप्त नही कर सकता इसी मान्यता को अश्वत्थामा द्वारा प्रकट किया है। अभिमन्यु को कविने चंद्रमा का अवतार कहा है। इसके अलावा नकुल, सहदेव, भीम, अर्जुन, द्रौपदी, कुंती, धृतराष्ट्र आदि पात्रों को द्रौपदी खडकाव्य के समान ही प्रतीक रुप में लिए गए है। कविने पात्रो की प्रतीकात्मकता के द्वारा आज के व्यक्ति और समाज की कुछ समस्याओं को चित्रित किया है। अत

खंडकाव्य की दृष्टिसे पात्रयोजना करने में कवि सफल रहा है।

अध्याय के अंतमें इन चारों कृतियों में होनेवाली प्रतीकात्मकता को स्पष्ट कियां गया है। अत: यह बात स्पष्ट हो जाती है कि प्रस्तुत दोनो कृतियों की पात्र परिकल्पना खंडकाव्य की दृष्टिसे पर्याप्त सफल मानी जा सकती है।

पॉचवे अध्याय में खंडकाव्य के 'शिल्पविधान' की दृष्टिसे नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्यों की चर्चा की गयी हैं। शिल्प की दृष्टि से द्रौपदी की भाषा में एक जीवन , ताजगी, प्राणवत्ता, परिलक्षित होती है। कविने दार्शनिक विचारों में गूढ तत्सम तथा क्लिष्ट शब्दोका प्रयोग किया है। द्रौपदी में भावानुकूल भाषा और भाषानुसार शब्दचयन किया है। प्रतीक विधान भी सशक्त है। कविने अपना अध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रतीक पध्दति में प्रस्तुत किया हैं। अलंकार योजना की दृष्टिसे भी द्रौपदी में कवि सफल रहा है। कविने भावानुकूल तथा प्रसंगानुकूल अलंकारोंकी योजना की हैं। छंदयोजना भी भाव एवं भाषा के अनुकूल हैं। उसमे गति ताल एवं लय का पूर्ण निर्वाह हुआ हैं। इसप्रकार द्रौपदी में अध्यात्मिक प्रतीकों और उचित अलंकार के प्रयोग का समन्वय किया हैं। साथही अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए कवि ने संस्कृतनिष्ठ भाषा को अपनाकर शिल्पविधान को सशक्त बनाया है।

'उत्तरजय' की भाषा का रुप पूर्णत संस्कृतनिष्ठ हैं। संस्कृतनिष्ठ समासांत पदावली के होने के कारण भाषा का रुप और दुरुह और क्लिष्ट हो गया है। काव्य में कुछ पात्रों का रुप प्रतीकात्मक हैं। ये पात्र किसी वर्ग या समुदाय के प्रतीक न होकर अपने जीवन के प्रतीक बनकर आए हैं। काव्य की अभिव्यंजना शक्ति को अधिक तीव्र करने के लिए कविने शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनो प्रकार के अलंकारों का सफल प्रयोग किया है। काव्य में छंदों का भी विशेष स्थान है , उसमें गति, ताल, लय का पूर्ण निर्वाह हुआ है। उत्तरजय के सभी छंद तुकांत हैं। अत: उत्तरजय की भाषा प्रतीक विधान, अलंकार योजना, तथा छंद की दृष्टिसे सफल खंडकाव्य माना जा सकता हैं। कवि का शिल्प विधान भावपक्ष को कही भी हल्का नहीं होने देता।

उपर्युक्त विवेचन से यह बात सिध्द हो जाती हैं कि खंडकाव्य के शिल्पविधान की दृष्टि से प्रस्तुत दोनो कृतियो में कवि को पर्याप्त सफलता मिली है।

छठे अध्याय में 'जीवन संदेश' की दृष्टि से इन दोनों कृतियोंपर विचार किया गया हैं। कविका अध्यात्मिक दृष्टिकोण, नारीसंबंधी दृष्टिकोण, गरिमामयी , रचना विधान, कर्मयोग साधना, अहिंसा, पीडा का महत्व आदि निकषों के आधारपर इन कृतियो में व्यक्त बाहय तथा आंतरिक जीवनदर्शन चर्चा की गयी है।

द्रौपदी में कविने प्रमुख रुपसे द्रौपदी के माध्यम से अपने नूतन आध्यात्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है। इसके लिए कविने प्रतीकात्मक शैली को अपनाया है। इस प्रतीकात्मक कथाकाव्य का आधार कवि को महाभारत में ही बीज रुप में प्राप्त हुआ हैं। नरेंद्र शर्मा इस दृष्टिसे बडे आस्थावादी और आस्तिक कवि है। उन्होंने परंपरा को भी बडी उदारता से ग्रहण किया है। कविने द्रौपदी को जीवनीशक्ति तथा पाँच पांडवों को पाँच महातत्वो युधिष्ठिर - आकाशतत्व, भीम-पवनतत्व, अर्जुन-अग्नितत्व, नकुल-जलतत्व, सहदेव-भूमितत्व, के प्रतीक हैं। द्रौपदी इन पाँच तत्वों को अपने लुप्त सत्वोंकी प्राप्ति के लिए प्रेरणा देनेवाली जीवनीशक्ति का शाश्वत प्रतीक हैं। नारी एक ऐसी अद्‌भूत शक्ति है, जो पुरुष के कल्याण के लिए दुख पीडा यातना सहती है। वह दुखा ताप की ऐसी दीप्ति है जिससे पुरुष में अपार साहस और अदम्य उत्साह के दर्शन होते हैं। इसतरह द्रौपदी खंडकाव्य में कविने अपना आधात्मिक दृष्टिकोण और नारी के तेजबल का गुणगान किया है। और कवि उसमें सफल रहा हैं। जीवनदर्शन की दृष्टिसे दृष्टिसे द्रौपदी सफल कृति मानी जा सकती हैं।

उत्तरजय मे कविने महाभारत की कथा के आधारपर कथावस्तु का विकास किया है। महाभारत के महत्वपूर्ण पात्रोंको प्रतीक रुप में लेकर कई मनोवैज्ञानिक समस्योओं को उठाया हैं। जिसका वर्तमान व्यक्ति और समाज से सीधा संबध रहता हैं। युधिष्ठिर जैसे आकाशतत्व का प्रतिनिधित्व करनेवाले आदर्श व्यक्ति आज भी मटमैले वास्तविक को अंगीकार करने में सकुचाते हैं। आज के आचार्य पुत्र भी द्रोणी अश्वत्थामा के समान अस्थैम्य परधर्मरत और पीडाभीरु है। स्वधर्म, स्वत्व, शांति और मुक्ति की प्राप्ति के लिए आकाशप्रिय धर्मराज आज भी व्यग्र है। आज आज शकुनि और दुर्योधन जैसे प्रतिपक्षी हैं। कवि ने उत्तरजय मे इस बातपर बल दिया है कि संसार में आदर्शवादी बनकर नही रहा जा सकता। संसार की अनीति और अनाचार को दूर करने के लिए कठोर बनना होगा निष्काम कर्म की साधना के रुप मे गीता के आदर्श को अपनाना होगा। संसार की पीडाओ से पलायन करना उचित नहीं अपितु उनसे संघर्ष कर उन्हें दूर करना होगा। इस प्रकार नरेंद्र शर्मा इन दोनों कृतियों मे अपना जीवनदर्शन प्रस्तुत करने में पूर्णत सफल रहें हैं।

इसप्रकार पहले अध्याय में निर्दिष्ट खंडकाव्यों के तत्वों के आधारपर श्री. नरेंद्र शर्मा की प्रस्तुत दोनो कृतियो का खंडकाव्य की दृष्टिसे विचार करनेपर तेरी यह स्पष्ट धारणा हो चुकी हैं कि 'द्रौपदी' और 'उत्तरजय' इन दोनों कृतियों को सफल खंडकाव्य माना जा सकता हैं, क्योंकि इन दोनो कृतियो में खंडकाव्य के लिए आवश्यक गुण इन कृतियोंमें पर्याप्त मात्रा में है। वैसे

वैसे तो कवि ने उत्तरजय को गाथा काव्य कहा है जिसे आधुनिक खंडकाव्य की नई विधा मानी हैं, इस दृष्टिसे भी वह सफल कृति है।

द्रौपदी में कवि का महाभारत की कथा के आधारपर आध्यात्मिक दृष्टिकोण और नारी के तेजबल का गुणगान उद्देश्य की दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं। पौराणिक कथा तथा पात्रों के माध्यम से कविद्वारा प्रस्तुत नुतन आध्यात्मिक दृष्टिकोण सराहनीय हैं। प्रबंधकाव्य के लक्षणों के अनुसार कथावस्तु पात्र तथा उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया गया रचना विधान होने से सफल खंडकाव्य बन गया हैं। उत्तरजय में समकालीन समस्याओ की अभिव्यक्ति पीडा का महत्व, तथा पात्रों के अंर्तद्वंद्व को स्पष्ट करनेवाले संवादो के कारण इस कृति का प्रभाव बढ गया हैं। उत्तरजय को कवि ने गाथाकाव्य कहा है जो कि आधुनिक खंडकाव्य की नयी विधा मानी है। उसमे खंडकाव्य के सभी तत्वोंका सफल निर्वाह हुआ है।

इसप्रकार खंडकाव्य के तत्वो के आधारपर मै निसंकोच रुप से यह कह सकता हूँ कि नरेंद्र शर्मा की ।)द्रौपदी 2)उत्तरजय दोनों सफल खंडकाव्य कृतियाँ हैं। कविका प्रतीकात्मक कथाओंका परिवेश सांस्कृतिक तथा अध्यात्मिक हैं जिनमे उन्होने कुछ दार्शनिक विचारोंको प्रकट किया है। लोकमंगल की भावना का साक्षात्कार करा देनेवाली इन दोनों कृतियों की मौलिकता हिंदी काव्यजगत् में सदैव स्मरणीय रहेगी। अतीत से वर्तमान जोडनेका आपका प्रयास अभिनंदनीय है। इसीकारण खंडकाव्य विधा में नरेंद्र शर्मा का स्थान उच्च एवं आदरणीय धरातल पर प्रतिष्ठित कर देता है।

----------*----------*----------*----------

- संदर्भ ग्रंथ सूचि -

उपजीव्य ग्रंथ-

1) नरेंद शर्मा - 'द्रौपदी' - राजकमल प्रकाशन पटना सं. 1986.

2) नरेंद्र शर्मा- 'उत्तरजय' - रामचन्द एण्ड कंपनी, दिल्ली सं. 1966.

संदर्भ ग्रंथ हिंदी

1) नरेंद्र शर्मा- 'शूलफूल'- साहित्य भवन लि. इलाहाबाद सं. 1934.

2) नरेंद्र शर्मा-'प्रभातफेरी'- भारती भण्डार, प्रयाग सं. 1939.

3) नरेंद्र शर्मा- 'प्रवासी के गीत'- भारती भंण्डार प्रयाग सं. 1939

4) नरेंद्र शर्मा- 'पलाशवन'- भारती भण्डार प्रयाग सं. 1940.

5) नरेंद्र शर्मा- 'मिट्टी और फूल'- भारती भण्डार, प्रयाग सं. 2002 संवत्

6) नरेंद्र शर्मा- 'हंसमाला'- भारती भंण्डार प्रयाग सं. 2003 सवंत्

7) नरेंद्र शर्मा- अग्निशस्य' भारती भण्डार, प्रयाग सं. 2008 सवंत्

8) नरेंद्र शर्मा- 'रक्तचंदन'- भारती भंण्डार, प्रयाग सं. 1948.

9) नरेंद्र शर्मा- कदलीवन' - किताब महल- इलाहाबाद सं. 1954.

10) नरेंद्र शर्मा- 'प्यासा निर्झर'- समुदय प्रकाशन, बम्बई सं. 1964.

11) नरेंद्र शर्मा- 'कामिनी'- किताब महल, इलाहाबाद सं. 1953

12) नरेंद्र शर्मा- आधुनिक कवि भाग 9'- हिंन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सं. 1885 संवत्.

13) डॉ.एस. तकमणि अम्मा- 'आधुनिक हिंदी खंडकाव्य - सुर्य प्रकाशन, दिल्ली सं. 1987.

14) डॉ.लक्ष्मीनारायण शर्मा- 'नरेंद्र शर्मा और उनका काव्य' नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली सं. 1967.

15) डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र- 'नरेंद्र शर्मा का काव्य एक विश्लेषण - गोमती साहित्य सदन, लखनऊ सं. 1983.

16) डॉ. वल्लभदास तिवारी- 'हिंदी काव्य में नारी'- जवाहर पुस्तकालय, मथुरा सं. 1974.

17) श्रीमती विद्या केशव चिटको- 'हिंदी एकार्थ काव्य, स्वरुप एवं विश्लेषण - कौस्तुभ प्रकाशन, नाशिक रोड सं. 1988.

18) डॉ. सियाराम तिवारी- 'हिंदी के मध्यकालीन खंडकाव्य'- हिंन्दी साहित्य संसार,

दिल्ली सं. 1964.

19) डॉ. सरोजिनी अग्रवाल-' द्विवेदीयुगीन खंडकाव्य सुलभ प्रकाशन लखनऊ सं. 1987.

20) डॉ. शंभुनाथ पाण्डेय- 'रस अलंकार पिंगल'-विनोद पुस्तक मंदीर, आगरा सं. 1991/92.

21) फूलचंद जैन सारंग'-कविश्री नरेंद्र शर्मा और उनका 'उत्तरजय' प्रीतम प्रकाशन मंदिर, आगरा सं. 1991.

22) डॉ. बनवारीलाल शर्मा- 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी प्रबंधकाव्य - रामा पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर सं. 1972.

23) संपादक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा-'हिंदी साहित्य कोश भाग 1- ज्ञानमंडल वाराणसी, सं. 2020 सवंत्.

24) डॉ. शिवकुमार शर्मा- हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ- नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली. सं. 1967.

25) डॉ. स्नेहलता गुप्त- 'कामायनी का काव्यशास्त्रीय विश्लेषण'- विद्याा प्रकाशन कानपुर. 6 सं. 1988.

26) डॉ. रामसागर त्रिपाठी/डॉ. शांतिस्वरुप गुप्त- बृहत साहित्यिक निबंध'- अशोक प्रकाशन. दिल्ली सं. 1991.

27) डॉ. उषापुरी विद्यावाचस्पति - 'मिथक उद्‌भवद और विकास तथा हिन्दी साहित्य - अशोक प्रकाशन दिल्ली सं. 1991.

28) आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र - वाङःमय् विमर्श- हिन्दी साहित्य कुटीर वाराणसी, सं. 2006 सवंत्

29) आचार्य नंददुलारे वाजपेयी-'आधुनिक साहित्य-भारती भण्डार इलाहाबाद सं. 2022 संवत्

30) डॉ. गुलाबराय-'काव्य के रुप'-आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली- चतुर्थ संस्करण.

31) डॉ. भगिरथ मिश्र- हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास'- सं. 2005 सवंत्

32) पं. बलदेव उपाध्याय- संस्कृत आलोचना-हिन्दी समिती, लखनऊ

33) डॉ. शकुंतला दुबे- काव्य रुपों के मूलस्त्रोत और उनका विकास हिन्दी प्रचार पुस्तकालय वाराणसी

34) सं. डॉ. रामचंद्र तिवारी-'आधुनिक हिदी काव्य और कवि- नया साहित्य प्रकाशन, मिन्टो रोड, इलाहाबाद

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

35) आचार्य नंददुलारे वाजपेयी- हिन्दी साहित्य बीसवी शताब्दी- लोकभारती प्रकाशन, प्रयाग सं. 1966.

36) डॉ. गुलाबराय- हिंदी काव्य विमर्श- आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली.

37) डॉ. शकरदेव अवतरे- हिंदी साहित्य में काव्यरुपों का प्रयोग. राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली. सं. 1962

- संस्कृत मराठी ग्रंथसूचि -

1) आचार्य विश्वनाथ 'साहित्य दर्पण'- चौखांबा सिरिज ऑफिस, बनारस द्वि.सं. 1955.

2) आचार्य भामह- काव्यालंकार- 'भाष्य प्रो. देवेंद्रनाथ शर्मा- बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, सं. 1962

3) आचार्य हेमचंद्र- काव्यानुशासन

4) सं. प्रा. नरहर फाटक- श्री. मन्महाभारताचे मराठी सुरस भाषांतर खंड-7 सुरेखा प्रकाशन सं. 1968.

5) सं. प्रा. भालबा केळकर- संपूर्ण महाभारत खंड-3 वरदा बुक्स पुणे-16 सं. 1986.

----------*----------*----------*---------

SHIVAJI UNIVERSITY * KOLHAPUR